Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.831
Volume - 7, Issue - 04 April - 2024

DOIs:10.2018/SS/202404006 --:-- Research Paper / Article / Review

काशीनाथ सिंह के उपन्यासों में युवा वर्ग

डॉ. स्वाति
सहायक आचार्या, राजकीय महाविद्यालय सरस्वतीनगर, यमुनानगर, हरियाणा
Email - swati571988@gmail.com

सारांश- किसी भी देश की युवा पीढ़ी उस देश के भविष्य का निर्माण करती है। यह केवल आयु से सम्बंधित अवधारणा नहीं है। यह एक विचारधारा है जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का मार्ग दिखाती है। समकालीन साहित्यकार काशीनाथ सिंह ने युवा पीढ़ी के अनेक चित्र अंकित किए हैं। इनकी कथाओं के अनेक पात्र युवा वर्ग के विभिन्न पहलुओं का प्रभावी अंकन करते हैं। काशीनाथ सिंह ने युवावस्था से जुड़े विभिन्न मुद्दों और समस्याओं पर पैनी दृष्टि रखी है। देश के परिवर्तित वातावरण से युवा वर्ग पर पड़ने वाले प्रभाव को काशीनाथ सिंह की रचनाओं से परखा जा सकता है। काशीनाथ सिंह की अनेक रचनाओं के मुख्य पात्र युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए देश के समस्त युवा वर्ग का मार्गदर्शन करते हैं।

बीज शब्द : युवा, राष्ट्र, संस्कृति, प्रवृत्ति, समकालीन, परिवर्तन, समायोजन, कुंठा, संघर्ष, समस्या, समाज।

मुख्य आलेख : किसी भी राष्ट्र को विकसित बनाने में युवा वर्ग का सर्वाधिक योगदान होता है इसलिए युवा वर्ग की चर्चा मात्र एक जैवभौतिक अवस्था की परिभाषा दे कर समाप्त नहीं होती, इस योगदान को समझने के लिए युवा वर्ग का गुणात्मक अध्ययन आवश्यक हो जाता है। "युवावस्था मनुष्य के लिए वह मंच है जो सीखने और प्रदर्शन करने की अनेक क्षमताओं से भरा हुआ है।"[1] हिंदी साहित्य के प्रत्येक काल में साहित्यकारों द्वारा समकालीन परिवेश से प्रभावित युवा वर्ग की विभिन्न परिस्थितियों का प्रभावी अंकन किया गया है। समकालीन साहित्यकार काशीनाथ सिंह ने बदलते हुए सामाजिक परिदृश्य में युवाओं से जुड़े विभिन्न मुद्दों और समस्याओं से पाठकों का प्रभावी रूप से परिचय कराया है।

किशोर और युवावस्था की अवधि में मनुष्य के अंदर सर्वाधिक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। ये परिवर्तन शारीरिक एवं बौद्धिक होने के साथ-साथ सामाजिक भी होते हैं। विकास की इस प्रक्रिया में एक युवा को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ये समस्याएँ युवाओं को जीवन जीने की कला तो सीखाती ही हैं साथ ही सार्थक निर्णय शक्ति की ओर भी प्रेरित करती हैं। इस काल में मनुष्य अपने गुणों और क्षमताओं को पहचानकर उनसे एक सशक्त भविष्य के निर्माण की नींव डाल सकता है। काशीनाथ सिंह ने अपने पहले उपन्यास 'अपना मोर्चा' के माध्यम से युवाओं को उनके उद्देश्य के प्रति सचेत होने का प्रबल संकेत किया है इसलिए आंदोलन के लिए कूच करने से पहले वे युवाओं को कहते हैं "लेकिन रुकों!... यहाँ से कूच करने से पहले हम यह जान लें की हमारी लड़ाई किस बात के लिए है और किस से है? बैगर इसे जाने हममें वह विश्वास, यह कठोरता ही नहीं पैदा हो सकती है जो ऐसे मौकों पर जरूरी है"[2] इसके साथ ही वह उपन्यास के नायक ज्वान के माध्यम से युवाओं को सार्थक निर्णय शक्ति की ओर प्रेरित भी करते हैं–"इसलिए ऐसी लड़ाई के लिए जरूरी है की जो सवाल चुनों, वह सिर्फ तुम्हारा न हो। वह तुम्हारे भाई से भी जुड़ा हो, चाचा से भी, पिता से भी, उनसे भी जो तुम्हारे मन और शरीर की भीतरी पीड़ा से परिचित हों।"[3] एक युवा को जीवन के अर्थ और उपलब्धि की खोज रहती है।

युवा शक्ति के प्रवाह की दिशा यह तय करती है कि रचनात्मक उपलब्धि होगी या विनाश होगा। युवावस्था वह संक्रांति काल है जिसमें युवा निर्भरता से आत्मनिर्भरता और सुरक्षा प्राप्ति से सुरक्षादाता की भूमिका में पदार्पण करता है।

यह मुख्य रूप से जिज्ञासा, ज्ञान और अनुभव प्राप्त करने का समय है। युवाओं में अपेक्षाकृत अधिक आदर्शवाद शामिल होता है। ये सामाजिक परम्पराओं और समस्याओं के प्रति अत्यधिक असंतोष दिखाते हैं इसलिए इनकी स्वार्थहीन परंतु आवेशपूर्ण ऊर्जा को कई प्रकार की संस्थाएँ अपने स्वार्थी उद्देश्यों की पूर्ति में लगा देती हैं। यही कारण है कि आज राजनीति कुछ बेरोजगार युवाओं की शरणस्थली बनती जा रही है। कई पार्टियाँ अपनी राजनीतिक आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए इन युवाओं को हथियार की तरह इस्तेमाल करती हैं। कम समय में नाम और धन कमाने का लालच ऐसे युवाओं को इस तरह की राजनीति की ओर आकर्षित करता है। काशी का अस्सी उपन्यास के पात्र रामवचन पाण्डेय के अनुसार -राजनीति बेरोजगारों के लिए रोजगार कार्यालय है, एंप्लॉयमेंट ब्यूरो। सब आई.ए.एस.,पी.सी.एस. हो नहीं सकता..ठेकेदारी के लिए भी धनबल-जनबल चाहिए, छोटी-मोटी नौकरी से गुजारा नहीं.. खेती में कुछ रह नहीं गया है..नौजवान बिचारा पढ़-लिखकर, डिग्री लेकर कहाँ जाए? और चाहता है लंबा हाथ मारना। सुनार की तरह खुट-खुट करनेवालों का हश्र देख चुका है, तो बच गई राजनीति। वह सत्ता की भी हो सकती है, विपक्ष की भी और उग्रवाद की भी।"[4]

ढोंगी राजनेता सदैव ही बेरोज़गार युवाओं को अपनी लुभावनी कार्यसूची का हिस्सा बना लेते हैं। युवा वर्ग ख़तरा उठाने के लिए भी तत्पर रहता है इसलिए इन लुभावनी और स्वार्थपरक योजनाओं का शिकार बनता चला जाता है। ऐसे युवा स्वयं को 'कूल' दिखाने वाले संसाधनों और अनुभवों की तलाश में भी रहते हैं। मीडिया भी इस बात को अच्छी तरह से समझता है। वे यही संसाधन बाज़ार में बेचते हैं जो युवा वर्ग को अधिक से अधिक लुभाते हैं। उपन्यास 'अपना मोर्चा' में व्यवसायी के इस कथन से बाज़ारवाद के इसी तथ्य की पुष्टि होती है। उपन्यास में व्यापारी 'खानचंद' की मनोवृत्ति का चित्रण है जिसमें वह लड़के-लड़कियों की ओर इशारा करते हुए खजांची और नौकर को समझाता है- "इनके मुंह न लगो, इनसे दिल्लगी न करो, इन्हें सहो, इन्हें झेलो क्योंकि ये हमारे रोजगार हैं, उसकी आमद हैं। इन्हीं के चलते शहर आबाद है, सड़कें रौशन हैं, ज़िंदगी मे खुशियां हैं, मज़े ही मज़े हैं। ज़रा सोचो ये ही न होंगे तो हमारी 'नेसकैफ़े' और 'ब्रुकबॉण्ड' का क्या होगा?[5]"

आज का युवा वर्ग वास्तविकता से कोसों दूर जाकर केवल बाहरी दिखावे तक सीमित हो गया है। वैश्वीकरण के समय में ग्रामीण और शहरी युवाओं के बीच का अंतराल भी बढ़ता जा रहा है। शहरी जीवन की सुविधाओं में पला-बढ़ा मनुष्य ग्रामीण जीवन के अपेक्षाकृत कम सुविधा वाले मनुष्य से सर्वथा अलग हो जाता है। कह सकते हैं कि आज के युवाओं में सही और ग़लत की अनिश्चितता के कारण अजीब सी स्थिति बनी हुई है। "आजकल के युवा यह नहीं समझते कि नया जोड़ने में कोई बुराई नहीं है किंतु मूलस्वरूप का नष्ट हो जाना दुर्भाग्यपूर्ण है।"[6] काशीनाथ सिंह की लेखनी ने युवाओं के बाहरी परिवेश और बदलाव के साथ-साथ उनके अंतर्मन में छिपे मनोभावों को भी अत्यधिक कुशलता से प्रस्तुत किया है।'बैलून', 'सूचना', 'एक बूढ़े की कहानी', 'मेरा भी हाथ है', 'पायल पुरोहत' आदि कहानियों और 'महुआ चरित', 'अपना मोर्चा' व 'रेहन पर रग्घु' उपन्यासों में युवाओं की परिवर्तित यौनेच्छाओं और वैवाहिक मान्यताओं को व्यक्त किया गया है।

युवावस्था की परिवर्तित यौनेच्छाओं और वर्जनाओं को 'महुआ चरित' उपन्यास की नायिका महुआ के जीवन से समझा जा सकता है। युवावस्था में शारीरिक विकास के कारण युवाओं में वयस्कों के समान व्यवहार करने की इच्छा जागृत होती है और वह अनेक प्रकार की यौन भूमिकाओं की कल्पना करने लगता है। ऐसी ही कल्पनायें महुआ के जीवन में उभरने लगती हैं जिसके कारण महुआ को अनेक पीड़ादायी मानसिक द्वंद्वों से गुजरना पड़ता है। एक पुरुष लेखक के द्वारा महिला चरित्रों का ऐसा परिपक्व चित्रण दुर्लभ ही प्राप्य है। उन्मुक्त भोग को समर्थन देने के कारण वर्तमान समाज में युवाओं के समक्ष विवाह की अनिवार्यता भी लगभग समाप्त हो चुकी है। कहानी 'पायल पुरोहित' की नायिका पायल एक ऐसे ही निर्णय पर पहुँचती है– "दरअसल देह की समझ ने दिमाग की खिड़कियाँ खोल दी। मैं तुम्हारे साथ जीना तो चाहती हूँ, घर बसाना नहीं चाहती।"[7] अगर विवाह हो भी जाए तो आज का युवा वर्ग विवाहेत्तर संबंधो को अपनाने में भी नहीं हिचकता है। यही कारण है कि 'लाल किले के बाज' कहानी का नायक जादू प्रेमिका कावेरी से विवाहेत्तर सम्बन्ध रखना चाहता है। जादू कावेरी के समक्ष अपनी दलीलें प्रस्तुत करता है- "कि वे विवाह माँ बाप का मन रखने के लिए कर रहे हैं इससे ज़्यादा उन्हें उस लड़की से कोई मतलब नहीं। जब माँ-बाप कर रहे हैं तो अपना संभालेंगे।"[8]

आज वैवाहिक जीवन में प्रेम और विश्वास के स्थान पर छल और प्रपंचों को उचित ठहरा दिया जाता है। उपन्यास 'महुआ चरित' में महुआ व उसका पति विवाह पूर्व संबंधों को छिपा कर नये जीवन का प्रारंभ करते हैं। महुआ के अनुसार- "मैंने पूरी कोशिश की कि वह विश्वास कर ले कि मेरे यौवन का पहला पुरुष वही है और इसमें कामयाब हुई। मेरी ही तरह वह कामयाब हुआ यह साबित करने में कि उसके भी जीवन की प्रथम स्त्री मैं ही हूँ।"[9] भारतीय समाज में विवाह उपरांत ही यौन सम्बन्धों में लिप्त होने और इन सम्बन्धों में एकनिष्ठता होने पर बल दिया जाता है तथापि इन लोकाचारों में निरंतर बदलाव आ रहा है। इसलिए युवा वर्ग के लिए ये लोकाचार केवल एक दिखावा मात्र बनते जा रहे हैं। ऐसे युवा इन मान्यताओं को केवल दो पीढ़ियों का अंतर बता कर ख़ारिज कर देते हैं। आजकल युवाओं में वैवाहिक समीकरण केवल गुणवान वर या वधू देख कर नहीं बनाए जाते, इनके लिए विवाह एक 'पैकिज' की भाँति हो गया है। काशीनाथ सिंह के प्रसिद्ध उपन्यास 'रेहन पर रग्घु' का पात्र संजय इस विचार को समर्थन देने वाला युवक है। संजय के अनुसार- लड़की को टुकड़ों में नहीं, 'टोटैलिटी' में देखना चाहिए... लड़की और पत्नी को एक ही तरह से नहीं देखना चाहिए. रूप रंग, हाव भाव, नाज नखरे लड़की में देखे जाते हैं, पत्नी में नहीं! ये सब पुराने कांसेप्शन हुए- हमारे मम्मी पापा के जमाने के, हमारे नहीं!"[10]

पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण युवाओं को पतन के रास्ते पर धकेल रहा है। राष्ट्रप्रेम जैसी भावना से वह कोसो दूर है। टी.वी. और मीडिया के अन्य माध्यमों के कारण युवा बिना सोचे समझे पश्चिमी जीवन शैली की नक़ल करते जा रहे हैं। 'रेहन पर रग्घु' उपन्यास की पात्र सोनल एक ऐसी भारतीय है जो कैलीफ़ोर्निया में रहती है। उस के अनुसार- "वह एक ऐसे समाज में आ गई थी जिसमें डॉलर को छोड़कर किसी और चीज़ से प्यार के लिए ईर्ष्या करना पिछड़ापन और गंवरपनथा!"[11] पश्चिमीकरण में रचे बसे युवा मूल्यों और नैतिकता की सीख न लेकर केवल संपन्नता की ओर भागते रहते हैं और जब वह वांछित जीवन शैली इन युवाओं को नहीं मिलती तो ये कुंठाग्रस्त जीवन जीने लगते हैं और अनुचित विकल्पों का मार्ग अपना लेते हैं। उदारीकरण के इस युग में युवा पीढ़ी के समक्ष बदलती हुई परिस्थितियों से अनुकूलन स्थापित करने की चुनौती बनी हुई है। यह पीढ़ी उपभोक्तावादी संस्कृति की दास बनती नज़र आ रही है। 'कासी का अस्सी' उपन्यास में यह नजारा अस्सी घाट पर देखने को मिलता है। काशीनाथ सिंह लिखते हैं "जब से अस्सी पर अँग्रेज-अंग्रेजिन आने शुरू हुए हैं तभी से मोहल्ले के लौंडे हेरोइन और ब्राउन शुगर, चरस के लती हो रहे हैं ।"[12]

इन परिस्थितियों का ही परिणाम है कि कुछ युवा हिंसा, अपराध और साम्प्रदायिकता जैसी कुपरिवृत्तियों के जाल में उलझ जाते हैं और कुछ सामाजिक दुर्व्यवहार और उत्पीड़न से पीड़ित होते हैं। ऐसी स्थितियों में समायोजन का संघर्ष निरंतर चलता रहता है। युवाओं में मदिरापान और मादक पदार्थों की लत अब एक आम समस्या बन चुकी है। दूसरी ओर नौकरी और जीवनयापन की दौड़ में बेरोज़गार रह गया युवा वर्ग भी स्वयं को अपेक्षित महसूस करता है। काशीनाथ सिंह की कहानी मुसईचा बेरोजगारी का दंश झेल रहे एक ऐसे युवक की कहानी है जो इच्छित नौकरी पर केवल अपनी दावेदारी बनाने के लिए दूसरे युवक की एक आँख निकाल देता है। युवाओं को समय-समय पर अपनी शारीरिक और भावनात्मक परिवर्तनों से होने वाली उलझनों का सामना करना पड़ता है। स्वयं को सिद्ध करने का बाह्य दबाव भी युवाओं पर बना रहता है। इस दबाव से निकलने में मिलने वाला सहयोग और मार्गदर्शन भी कई बार नगण्य रहता है। इसी कारण कई युवा स्वयं को असफलता का पर्याय समझ कर आत्महत्या जैसा कदम उठा लेते हैं। युवा वर्ग के सर्वांगीण विकास में परिवार की अहम् भूमिका होती है। पारिवारिक सदस्यों के नैतिक आचार-विचार युवाओं के जीवन को अत्यधिक प्रभावित करते हैं। माता-पिता की अति-महत्वाकांक्षाएं भी संतान पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दबाव डालती हैं और जब कभी वे पूरी नहीं होती तो बच्चा आत्मविश्वास खोने लगता है। उपन्यास 'उपसंहार' में कृष्ण के पुत्र प्रदयमन के समक्ष भी इस प्रकार की परिस्थितियाँ आती हैं और वह अपने कष्टों के लिए कृष्ण को उत्तरदायी ठहराते हैं। परिवार के उपरांत युवाओं को मार्गदर्शित करने में शिक्षण संस्थानों की अहम् भूमिका सामने आती है।

तमाम असंगतियों के बाद भी युवाओं का एक छोटा परंतु महत्वपूर्ण वर्ग सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों के विभिन्न स्तरों के प्रति जागरूक है और इस ओर प्रयत्नशील है। इसी कड़ी में 'रेहन पर रग्घु' उपन्यास की युवा पात्र सरला का नाम लिया जा सकता है जो सजग है और समाज की कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाना जानती है। सरला दहेज़ के लिए अपने परिजनों को साफ़ मना कर देती है - मैने ये कब कहा है? मैंने सिर्फ़ यह कहा है कि मुझे ऐसी शादी नहीं करनी है जिसमें लेन देन और मोल भाव होता हो ?"[13]ऐसे विचार से अपरिहार्य रूप से पितृसत्तात्मक समाज के भीतर एक हलचल मचना स्वाभाविक है। आज का युवा धर्म की संकीर्ण विचारधाराओं को छोड़ कर स्वयं की आध्यात्मिक उन्नति

की ओर भी अग्रसर है। जिसमें धर्म के आधार पर किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं है। कहानी 'वे तीन घर' का मदन ब्राह्मण होते हुए भी निम्न जाति के मित्र विपत को सर्वोच्च महत्ता देता है और परिणामस्वरुप अनावश्यक लगने वाले धार्मिक रीति-रिवाजों से दूरी बनाये रखता है।

निष्कर्ष : काशीनाथ सिंह मुख्यतः सामाजिक यथार्थ को चित्रित करने वाले कथाकार हैं। इन्होंने युवा वर्ग को शक्ति और सीमा दोनों पक्षों में अभिव्यक्त किया है। काशीनाथ सिंह ने युवा पीढ़ी के सूक्ष्म मनोभावों को नवीन परिवेश के बदलते भावबोध के साथ प्रस्तुत किया है। भले ही ये युवा पात्र समस्याओं का पूर्ण हल न प्रदान करते हों किंतु पाठक के मन-मस्तिष्क पर इनके समाधान हेतु जिज्ञासा भरे प्रश्नचिन्ह अंकित करने में अवश्य सक्षम हैं।

संदर्भ सूची :

1. डॉक्टर निशा अग्रवाल, युवा पीढ़ी के बढ़ते कदम, पृष्ठ संख्या 9
2. काशीनाथ सिंह, अपना मोर्चा, पृष्ठ संख्या 100
3. काशीनाथ सिंह, अपना मोर्चा, पृष्ठ संख्या 121
4. काशीनाथ सिंह, काशी का अस्सी, पृष्ठ संख्या 35
5. काशीनाथ सिंह, अपना मोर्चा, पृष्ठ संख्या 21
6. के. आर. रवि, युवा जीवन प्रबंधन और सफलता, पृष्ठ संख्या 15
7. काशीनाथ सिंह, पत्ता पत्ता बूटा बूटा, पृष्ठ संख्या 30
8. काशीनाथ सिंह, कहनी उपखान, पृष्ठ संख्या 195
9. काशीनाथ सिंह, महुआ चरित, पृष्ठ संख्या 64-65
10. काशीनाथ सिंह, रेहन पर रग्घु, पृष्ठ संख्या 21
11. काशीनाथ सिंह, रेहन पर रग्घु, पृष्ठ संख्या 110
12. काशीनाथ सिंह, काशी का अस्सी, पृष्ठ संख्या 81
13. काशीनाथ सिंह, रेहन पर रग्घु, पृष्ठ संख्या 51